प्रपन्नपारिजातम्

गुरु परम्परा Guru Parampara

* श्रियै नमः *

* श्रीमते रामानुजाय नमः *

* प्रपन्नपरित्राणम् *

लोकाचार्याय गुरवे कृष्णपादस्य सूनवे ।
संसारभोगिसंदष्टजीवजीवातवे नमः ॥

मुमुक्षोर्मोक्षार्थं सर्वेश्वरमाश्रितस्यानन्यगतित्वाकिञ्चन्येऽपेक्षिते ।

अनन्यगतित्वं नाम 'निवर्तय दुःखं मा वा निवर्तकान्तरशून्योऽहमिति' प्रकारेण सर्वेश्वरं विनाऽन्यः कश्चन रक्षकोनास्तीति स्थितिः ।

संसार सर्प से ग्रसित जीवों को जिलानेवाले श्रीकृष्णपाद के सुपुत्र लोकाचार्य स्वामी को नमस्कार स्वीकार हो।

श्रीसर्वेश्वर का आश्रयण करनेवाले चेतन को अनन्यगतित्व और अकिञ्चनत्व अपेक्षित है ।

अनन्यगति के माने—"दुःख निवारण करो चाहे न करो मेरा दूसरा कोई रक्षक नहीं है" इस कथन के अनुसार

भ्रातृपुत्रमातापितृब्रह्मरुद्रादयो रक्षकाः न भवन्ति किमिति चेदुच्यते ।

भ्रातरो रक्षका न भवन्तीति वालि-विषये रावणविषये च द्रष्टव्यम् ।

पुत्राः रक्षकाः न भवन्तीति रुद्रविषये कंसविषये च द्रष्टव्यम् ।

श्रीसर्वेश्वर के सिवाय दूसरा कोई भी रक्षक नहीं है, अतः रक्षकान्तर से व्यावृत्त होकर रहना ।

भ्राता, पुत्र, माता-पिता, ब्रह्मा. रुद्र इत्यादिक रक्षक नहीं हैं क्या ?

भाई रक्षक नहीं होते इसके दृष्टान्त में वालि और रावण को देख लो (सुग्रीव और विभीषण ने श्रीराम से मिलकर कैसा भाईचारा निभाया) ।

पुत्र रक्षक नहीं होते, इस बात को रुद्र और कंस के वर्ताव से देख लो (रुद्रने अपने पिता ब्रह्माका मस्तक छेदन किया और कंस ने अपने पिता उग्रसेन को कारागृह में डाल दिया ।)

मातापितरौ न रक्षकौ भवत इति कैकेयिविषये हिरण्यविषये च द्रष्टव्यम्

मातापितृभ्यां यौवनविरोधीत्युपेक्षणम्

क्षामकाले मनुष्यं दृष्ट्वा गुल्वे स्थापनं मूल्यमुक्त्वा विक्रयणम्

विपदागमेऽवनार्तु चिन्तनमर्थक्षेत्राद्यर्थं हिंसनम्

माता पिता भी रक्षक नहीं हैं, इस विषय को माता कैकेयी और पिता हिरण्यकशिपु के आचरण से देख लो। (माता कैकेयी ने पुत्र रामको वनवास दे दिया, जिससे उसके पुत्र भरत को अत्यन्त कष्ट हुआ, पिता हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने तक का उद्योग किया।)

माता-पिता के द्वारा, युवावस्था का विरोधी मानकर पुत्र को उपेक्षा कर देना (धाई द्वारा ही पुत्रका पालन पोषण करना।)

विपत्ति (वैधव्य एवं अविवाहित) काल में हुए पुत्र को इधर उधर मनुष्यों की दृष्टि बचाकर घास-फूस में चुपचाप

मरणावस्थायामज्ञानेन द्रव्यं निक्षिप्तं चेद्वदवदेति परितः स्थित्वा" इत्युक्तप्रकारेणेश्वरं स्मृत्वा तीरं यथा न प्राप्नुयात्तथा व्याकुलीकरणं मारणमित्यादीनि क्रियन्ते ।

स्त्रीणां भर्तारो रक्षका न भवन्तीति-धर्मपुत्रादिविषये नलविषये च द्रष्टव्यम् ।

रख देना अथवा मूल्य बताकर बेच देना ।

आपत्ति आने पर अनादर करने की सोचना, जमीन-जायदाद के पीछे हिंसा की सोचना ।

मरणासन्नदशा में चारों ओर घेर कर बैठ जाते हैं और पूछते हैं कि भूल से कहीं द्रव्य रक्खा रह गया हो तो बता दो, अपने करुणापूर्ण आलाप और विलाप द्वारा उसके चित्त को ऐसा आकर्षित कर लेते हैं, जिससे कि वह भगवत्स्मरण कर भगवान को प्राप्त न कर सके ।

पति स्त्रियों के रक्षक नहीं होते इस बात को युधिष्ठिरादिक एवं नल के बर्ताव (द्रौपदी के चीरहरण और दमयन्ती को अर्धनग्न वन में छोड़ देने) से देख लो ।

एतेषां रक्षकत्वाभावेऽपि लोकानां दृष्टिप्रदौ चन्द्रादित्यौ किमिति रक्षकौ न भवत इति चेदुच्यते ।

तौ चेश्वराज्ञाभीत्या स्वेच्छासञ्चार-मप्राप्य घटिकाभागं कृत्वानियमेनोदया-स्तमयौ प्राप्य हिरण्यरावणादिहस्तगतौ तेषां नीचवृत्तीः कुर्वन्तौ संचरन्तौ कौचि-दिति रक्षकौ न भवतः ।

अस्तु ! इनमें रक्षकत्व न सही परन्तु समस्त लोकों के आलोक देनेवाले चन्द्रमा और सूर्य में भी रक्षकत्व नहीं है क्या ? ।

वे "चन्द्रमा और सूर्य" दोनों ईश्वर की आज्ञाके उल्लं-घन के भय से स्वेच्छाचारी न होकर ठीक समय पर उदित और अस्त होने से स्वयं पराधीन हैं और हिरण्यकशिपु तथा रावण के वश में आकर उनकी सेवा सुश्रुषा में लगे रहे, अपनी ही रक्षा नहीं कर पाये, अतः वे रक्षक नहीं हैं ।

लोकत्रयपालकश्चेन्द्रः कदाचिदस्मत्प-
दच्युतिर्भवतीतिभीतः शापोपहतो ब्रह्म-
हत्याभिभूत इन्द्रजिद्धस्तगतो महाबलिप्र-
भृतिभिरपहृतैश्वर्यः, स्रवदश्रुनेत्रो नम्र-
शिराः संचरतीति रक्षको न भवति ।

ब्रह्मा च मधुकैटभाभ्यां क्लेशं प्राप्ति-
तोऽपहृतवेदोनेत्रभ्रष्टो,धनभ्रष्ट इति भूमिमु

तीनों लोकों के पालन करनेवालां इन्द्र अपना पद जाने कब छिन जाय इससे भयभीत, गौतम के शाप से ग्रस्त, ब्रह्महत्या (वृत्तासुरवध) से व्याकुल, मेघनाद के बन्धन से आबद्ध, महाबलि इत्यादि द्वारा ऐश्वर्यभ्रष्ट किया गया, अतः आंखों से आंसू बहाता नीचे गर्दन झुकाकर समय बितानेवाला रक्षक नहीं है ।

ब्रह्मा भी मधु और कैटभ दैत्यों द्वारा क्लेश को प्राप्त, हयग्रीव दैत्य ने जिससे वेदों का अपहरण कर लिया, अतएव ज्ञानहीन, धनहीन होने से किंकर्तव्यविमूढ़ होकर भूमि कुरेदनेवाले और कामावेश में स्वपुत्री सरस्वती के पीछे

लिखन्रुद्रहस्तेन छिन्नशिराइति न रक्षकः ।

रुद्रश्च सकल प्राणिसंहारैकबृत्तिकः पिपासया परिश्रान्तानां मुखेषु हुताशन-क्षेपकइवातिक्रूररूपः स्वाश्रितान् छित्वा देहि, दग्ध्वा देहीति क्रूरदास्यं कारयिता स्वाश्रित्तं वाणासुरं मस्तककुसुमम्लानिर्यथा न स्यात्तथा रक्षेयमिति प्रतिज्ञां कृत्वा स्वस्मा

दौड़ने पर अपने पुत्र रुद्र के हाथ से जिसका मस्तक छेदन हुआ अतः वह रक्षक नहीं है ।

महादेव भी जिसकी समस्त प्राणियों के संहार करने की ही ड्यूटी है, प्यास के मारे घबड़ाये हुए के मुख में अँगारे डालने के सदृशक्रूर वेष, अपने आश्रितों से "मस्तक काटकर भेंट में दो अथवा अग्नि में मस्तकों को हवन करके दो" ऐसी क्रूर दासता करानेवाले, अपने आश्रित वाणासुर के "मस्तक के फूल मलीन न हों ऐसी रक्षा करूँगा" इस प्रकार प्रतिज्ञा करके भी अपने (शिव) को ही संपुटित होकर प्रणाम करनेवाले हाथों को अकौवा के वन जैसे कटते देख

अञ्जलिंकृतवतां कराणामर्कवनच्छेदन-
मिव च्छेदनं दृष्ट्वा प्राणस्थितौ लवणवा-
णिज्येन जीवाम इतिमुख नयनमाच्छाद्य
गतवान् लोकगुरोस्स्वपितुर्ब्रह्मणो मस्तकं
छित्वा पातकी-सन् स्वाधिकृते ग्रामे स्वय-
मुपद्रवं कृत्वा प्राप्तशृङ्खलाः संचरन्त इव
सकपालहस्तः प्रत्यनावृतद्वारं प्रविश्य स्वं
प्रकाशयन् संचरितवांश्चेति न रक्षको
भवति ।

"जीते रहेंगे तो नमक के व्यवसाय से भी पेट भर लेंगे ।" इस कहावत के अनुसार मुख छिपाकर और आंख बचाकर चले जानेवाले, लोक पितामह अपने पिता ब्रह्मा का मस्तक छेदन कर पातकी बन अपने अधिकृत गाँव में उपद्रव कर अपने हाथों में हथकड़ी डलवाने वाले के सदृश हाथ में ब्रह्मकपाल लिये प्रत्येक दरवाजे में जा जाकर अपने आपको प्रकाशित करनेवाले रक्षक नहीं हैं ।

अथार्थो रक्षको भवेत्किमिति निरूपणे तस्करापहार्यत्वात्, कामापहार्यत्वात्, व्याध्यपहार्यत्वात् ज्ञात्यपहार्यत्वात् परैर्विरुध्य विषभक्षणं कृत्वा स्वेनैव मरणे हेतुत्वाच्च रक्षको न भवति ।

ईश्वरस्तु मातापितृभ्यांत्यक्त दशाया-मपि "पश्चात्स्थित्वा दासस्य बन्धुस्सन्

अस्तु ! धन को रक्षक माना जाय तो उसे चोर चुरा ले जाते हैं, कामनाओं की पूर्त्ति में व्यय हो जाता है, व्याधियों के निवारण में खर्च हो जाता है, दूसरों से विरोध (खरीद) कर विष खाकर अपने आप मरने का कारण बन जाता है, अतः धन भी रक्षक नहीं है ।

सर्वेश्वर तो माता पिता द्वारा छोड़ देने पर भी "अन्तर्हित होकर मुझे स्वयम् ही बढ़ाया" इस कथन के अनुसार अपने स्वरूप परत्व की परवाह न करके रूपान्तर से मातृप्रयुक्तसा वात्सल्य दिखाकर सांत्वना के वचन बोलते हुए 'जैसे स्वभक्ता द्रौपदी के केश बन्धनार्थ" वान्धवों एवं पतियों युधिष्ठिरादिकों की उदासीन दशा में भी अभिमत होने के कारण स्वयमे कण्ठ में पत्रिका बांधकर दूत का

वर्धयित्वा" इत्युक्तप्रकारेण स्वस्वरूपं विहाय रूपान्तरमंगीकृत्य मातृमुखं दर्शयित्वा मृदुवचनानि वदन् भ्रातृणां भ्रातृणाञ्चोदासीनदशायां स्वयमेवाभिमत्य कण्ठेपत्रिकां वद्धवादौत्यं कृत्वा भ्रूविक्षेपस्थले रथं संचार्य वक्षसि बाणामारोप्य मृतान् जीवयित्वा नारायणत्वप्रयुक्तसम्बन्धेनोदरचापल्येनान्तः स्थित्वा सत्तां रक्षन् स्थित इत्ययमेव सर्वेषां रक्षको भवति ।

कार्य किया और जहाँ भौंहें तरेरी जाँय एवं इशारे हों कि भगवान् कृष्ण हमारे विरुद्ध अर्जुन का सारथ्य कर रहे हैं उस स्थल में रथ का संचार किया एवं वाणों को अपने वक्षस्थल में स्वीकार किया और मरे हुओं को जिलाया" वैसे ही नारायण प्रयुक्त स्व स्वामी सम्बन्ध के कारण तथा वात्सल्य भाव की प्रेरणा से अन्तर्हित होकर सत्ता की रक्षा करते रहते हैं अतः सर्वेश्वर ही सबके रक्षक हैं ।

आकिञ्चन्यं माने—कर्मज्ञान और भक्ति में तथा उनके कारण भूत शमदमादि आत्म गुणों में अपने सम्पादकत्व के

अथाकिञ्चन्यं नाम—कर्मज्ञानभक्तिषु तद्धेतुभूतात्मगुणेषु चान्वयं बिना तद्विपरीतैः परिपूर्णतयावस्थितिम् स्वस्वरूपस्य सर्वप्रकारेण नारायणस्यात्यन्तपरतंत्रतया स्थितिं चानुसंधाय अस्मत्कार्यस्य वयं प्राप्ता न भवाम इति स्थितिः।

एतदुभयवतो नारायणमेवोपायोपेयत्वेनाश्रयणान निर्भरतया स्थितस्य शरीरावसानकाले प्राप्तिसमये 'नयामि परमंप-

---

अभिमान को छोड़कर भगवत्कृपा उपलब्ध मानना, तथा अपनी रहनी को शमदमादि गुणों से विपरीत दुर्गुणों से परिपूर्ण मानना, और अपने सर्वरूप को सर्वभावेन नारायण के अत्यन्त परतन्त्र मानना "अपने कार्य के निर्वहन में भी हमारा अधिकार नहीं है" ऐसा मानना।

इन "अनन्यगतित्व एवं अकिञ्चनत्व" दोनों के कारण नारायण को ही उपाय और उपेय रूप से वरण कर भगवान् के चरणारविन्दों में आत्म भार सौंप देने के कारण

दमित्युक्तप्रकारेण' सर्वेश्वरस्वयमेव स्वामीसन्नागत्यार्चिरादिमार्गेण परमपदं नीत्वा नित्यमुक्तैरेक पंक्तौ स्थापयित्वा नित्यकैङ्कर्यं दत्वा दयां कुर्यात् ।

निर्भरत्व का अनुसंधान करने वाले प्रपन्नों के शरीरावसान के समय परम पद प्राप्त्यर्थ "मैं स्वयं अपने भक्तको स्मरण करके अर्चिरादि मार्ग द्वारा परम पद ले जाता हूँ और नित्य मुक्तों के साथ पंक्ति में शामिल कर के नित्य कैङ्कर्य दे देता हूं यह बात भगवान् ने स्वयम् कही है अतः अवश्य कृपा करेंगे ।"

॥ इति टीकासमेतं प्रपन्नपरित्राणम् समाप्तम् ॥

Guru Parampara
गुरु परम्परा
Spiritual Archive of Guru Parampara
GET IT ON
Google Play
गुरु परम्परा
|| जय श्री राम ||
गणेश जन्म कथा
कैसे बने प्रथम पूज्य?
POWERED BY:- GURU PARAMPARA
कथार्णव
१८ आषाढ, २०८२, बुधवार
02 JUL 2025
Kathmandu
आषाढ़, शुक्ल, सप्तमी
05:11:59
19:03:38
कर्मकाण्ड
अन्त्यकर्म/ श्राद्ध
षोडश संस्कार
महापुराणम्
पुराणोपनिषद्
उपयोगी कथा
स्तोत्ररत्नम्
श्रीवैष्णव
गुरुकुल / शिक्षा
घर
ज्योतिष
प्रोफ़ाइल
समायोजन
अन्त्यकर्म/ श्राद्ध
श्राद्ध
एकोदिष्ट श्राद्धविधि
पार्वण श्राद्ध
तीर्थश्राद्ध
मासिकश्राद्ध
अन्त्यकर्म
त्रिपिण्डी श्राद्ध
मलिनषोडशी
पञ्चकविधि
दशगात्र
मध्यमषोडशी
वृषोत्सर्ग
नारायणबली प्रयोग
नारायणबली श्राद्ध
नारायणबली सूक्त
उत्तमषोडशी